Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 1 (2022)pp: 68-71
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के संदर्भ में सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि का ग़ाज़ियाबाद के इंदिरापुरम क्षेत्र का अध्ययन

डॉ रचना प्रसाद
रीडर, समाजशास्त्र विभाग, विद्यावती मुकुंदलाल महिला महाविद्यालय, गाजियाबाद
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सामाजिक, मानसिक, बौद्धिक एवं संवेगात्मक विकास करना है। इसके लिए विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक क्षेत्र के साथ-साथ सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में विकास पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के संदर्भ में सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धियों का अध्ययन किया गया है। इस शोध हेतु शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से कक्षा 8वीं के 200 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। इन विद्यार्थियों पर सामाजिक बुद्धि मापनी एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण को प्रशासित कर आँकड़े प्राप्त किए गए। गणना के आधार पर यह निष्कर्ष निकला कि सामाजिक बुद्धि एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है जबकि क्षेत्र का प्रभाव देखा गया है। उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों से उच्च पायी गयी।

Received 17 Jan, 2022; Revised 28 Jan, 2022; Accepted 31 Jan, 2022 © The author(s) 2022.
*Published with open access at **www.questjournals.org***

प्रस्तावना (Introduction) -

शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना है शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति का बौद्धिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है शिक्षा उसके जीवन को अर्थपूर्ण बनाती है उसके व्यवहार में परिवर्तन तथा परिवर्धन करती है जो कि व्यक्ति, समाज, देश तथा विश्वकल्याण के लिए आवश्यक है।

व्यक्ति सामाजिक बुद्धि के फलस्वरूप ही समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना पाता है तथा समाज व देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। विद्यार्थियों को सामाजिक बुद्धि प्रारंभ में अपने परिवार तथा वातावरण से प्राप्त होती है।

विद्यालयीन पाठ्यचर्या में विभिन्न क्षेत्रों का समावेश है जिसमें संज्ञानात्मक एवं सह संज्ञानात्मक क्षेत्र प्रमुख हैं। सह संज्ञानात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत शारीरिक स्वच्छता, कला, शाश्वत मूल्य, व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्य, पर्यावरण संरक्षण एवं जागरूकता, अभिवृत्ति, रूचि आदि क्षेत्रों का समावेश किया जाता है। बच्चों का इन क्षेत्रों में विकास आवश्यक है। अतः शिक्षकों को विद्यार्थियों की इन क्षेत्रों में भागीदारी, रूचि और जुड़ाव का सतत् अवलोकन करना होगा तथा ऐसे अवसर निर्मित करने होंगे जिससे इनका विकास हो।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study) – शोध के उद्देश्य निम्नानुसार हैं -

1. छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि को ज्ञात कर उसकी तुलना करना।
2. छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि ज्ञात कर उसकी तुलना करना।
3. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के मध्य तुलना करना।
4. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों में सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि का पता लगाना और दोनों के बीच तुलना करना।
5. उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि का पता लगाना।
6. विद्यार्थियों के सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि पर उनकी सामाजिक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ (Hypotheses) – प्रस्तुत शोध के परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

5. उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
6. छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की सहभागिता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

परिसीमन (Delimitation) - प्रस्तुत शोध का परिसीमन ग़ाज़ियाबाद के इंदिरापुरम क्षेत्र की उच्च प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक किया गया है।

शोध प्रक्रिया (Research Process) -

- **शोध विधि (Research Method)** – प्रस्तुत शोध में घटनोत्तर शोधविधि का प्रयोग किया गया है।
- **न्यादर्श (Sample)** – प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श का चयन यादृच्छिक चयन विधि द्वारा किया गया। इसके लिए बिलासपुर जिले के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित दो शहरी एवं तीन ग्रामीण उच्च प्राथमिक शालाओं में अध्ययनरत 200 विद्यार्थियों (छात्र-छात्राओं) का चयन किया गया है।
- **उपकरण (Tools)** – प्रस्तुत शोध अध्ययन में आँकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है -

1. सामाजिक बुद्धि मापनी (Social Intelligence Scale), :- डॉ. एन. के. चड्डा एवं श्रीमती उषा गनेशन
2. सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित प्रश्नावली।
3. सह संज्ञानात्मक क्षेत्र सहभागिता जानकारी प्रपत्र – स्वनिर्मित।

चर (Variables) - प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है -

1. स्वतंत्र चर :- सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence)
2. आश्रित चर :- सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि
3. सह चर :- छात्र-छात्राएं

सांख्यिकीय विश्लेषण (Statistical Operations) – प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (t मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01: "छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक- 01 : छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	बालक	100	102.44	5.57	198	1.35	NS
2	बालिका	100	103.56	6.08			

सारिणी के अनुसार छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 102.44 व 103.56, मानक विचलन 5.57 व 6.08 तथा 1 मान 1.35 पाया गया जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सारिणी मान से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया इसलिए परिकल्पना - 01 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 02: "छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

सारिणी क्रमांक- 02: छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	बालक	100	63.50	3.05	198	1.11	NS
2	बालिका	100	64.00	3.29			

छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि के मध्यमान क्रमश: 63.50 व 64.00, मानक विचलन 3.05 व 3.29 तथा t मान 1.11 पाया गया जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से कम है। अतः सार्थक अन्तर नहीं पाया गया व परिकल्पना – 02 स्वीकृत हुई।

परिकल्पना क्रमांक – 03: "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक- 03 : ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थिय की सामाजिक बुद्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	101.80	5.06	198	2.83	P>0.01
2	शहरी	100	104.20	6.78			

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के मध्यमान क्रमशः 101.80 व 104.20, प्रमाणिक विचलन 5.06 व 6.78 तथा t का मान 2.83 पाया गया जो 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है। अतः परिकल्पना – 03 अस्वीकृत हुई। शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, ग्रामीण विद्यार्थियों से उच्च पाई गई।

*Corresponding Author: डॉ रचना प्रसाद

परिकल्पना क्रमांक – 04: "ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा ।"

सारिणी क्रमांक- 04: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि के प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण	100	63.00	3.02	198	2.79	P>0.01
2	शहरी	100	64.50	4.44			

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 63.00 व 64.05, मानक विचलन 3.02 व 4.44 तथा t मान 2.79 पाया गया जो 98 df तथा 0.01 विश्वास स्तर पर सारिणी मान से अधिक है। अतः सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों से उच्च पाई गई तथा परिकल्पना – 04 अस्वीकृत हुई है।

परिकल्पना क्रमांक – 05: "उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह-संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक- 05 : उच्च एवं निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह-संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	ग्रामीण उच्च सामाजिक बुद्धि	100	64.70	3.71	198	3.84	P>0.01
2	निम्न सामाजिक बुद्धि	100	62.80	3.21			

अतः माध्य के आधार पर उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सहसंज्ञानात्मक क्षेत्र में उपलब्धि, निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया अतः परिकल्पना-05 अस्वीकृत हुई ।

परिकल्पना क्रमांक – 06: "छात्र-छात्राओं का सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की सहभागिता में सार्थक अन्तर नहीं होगा।"

सारिणी क्रमांक- 06 : छात्र-छात्राओं के सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की सहभागिता में प्राप्तांकों की सार्थकता

क्र.	विवरण	छात्र संख्या	परीक्षण से प्राप्त मान				सार्थकता स्तर
			M	SD	df	t	
1	बालक	100	68.56	3.60	198	1.71	NS
2	बालिका	100	69.50	4.12			

छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की सहभागिता का मध्यमान क्रमशः 68.56 व 69.50, तथा मानक विचलन 3.60 व 4.12 तथा t मान 1.71 पाया गया। अतः दोनों में सार्थक अन्तर नहीं है व परिकल्पना – 06 स्वीकृत की गयी।

निष्कर्ष (Conclusion) – प्रस्तुत लघु शोध में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं -

1. छात्र-छात्राओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. शहरी विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि, ग्रामीण विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि से उच्च पाई गई।
4. शहरी विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि ग्रामीण विद्यार्थियों की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की उपलब्धि से उच्च पाई गई।
5. उच्च सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों की सह-संज्ञानात्मक क्षेत्रों की उपलब्धि निम्न सामाजिक बुद्धि वाले विद्यार्थियों से उच्च पाई गई।
6. छात्र-छात्राओं की सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की सहभागिता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव (Suggestions) - शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –

1. विद्यालयों में ऐसे कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों को स्थान दिया जाए जिससे विद्यार्थियों की विभिन्न शैक्षिक रूचियों का विकास हो सके।
2. शिक्षक-पालक संबंधों को दृढ़ बनाने का प्रयास किया जाए जिससे विद्यार्थियों की जानकारी पालकों को मिलती रहे।
3. विद्यालय में विद्यार्थियों के मनोबल एवं आत्म विश्वास को विकसित करने के लिये शिक्षकों द्वारा समय-समय पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन एवं पुरस्कार दिया जाए।
4. ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन हो जिससे विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि के विकास के अवसर मिलें।
5. छात्र-छात्राएँ पोर्टफोलियो का निर्माण करें जिसमें बच्चों की रूचि, व्यवहार, व विशेष योग्यताओं, क्षमताओं के अनुरूप उनके द्वारा किए गए कार्यों का संकलन हो एवं मूल्यांकन कर बच्चों तथा उनके अभिभावकों को अवगत कराया जाए।

संदर्भ (References) -

1. सुमंगला, एन, (1990), : "ए स्टडी ऑफ लैंग्वेज क्रिएटीवटी ऑफ स्टेंडर्स नाइन्थ स्टूडेंट्स दन रिलेशन टू इन्टेलिजेन्सी, टीचर इनआल्वमेन्ट एण्ड जेण्डर।"
2. अफसान, (1991), : "शहरी एवं ग्रामीण बुद्धिमान छात्राओं में व्यवसायिक अभिरूचि और सृजनात्मकता का अध्ययन।"

3. मगंल , डॉ . एस के - शिक्षण व अधिगम का मनोविज्ञान टंडन पब्लिशर्स , लुधियाना - 2007
4. पाठक , पी . डी .- भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं , अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा - 2007-08
5. शर्मा , आर . ए .- शिक्षा अनुसंधान , सूर्या पब्लिकेशन , निकट राजकीय इंटर कॉलेज।
6. कौल , लौकश - शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली विकास पब्लिशिंग हाऊस , प्रा . लि . 2007
7. कुलश्रेष्ठ , एस . पी . - शिक्षा मनोविज्ञान
8. वालिया , डॉ . जे . एस .- शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार , अहम पाल पब्लिशर्स , एन . एन . 11 गोपाल
9. अवनिजा , के . के . 1995 - ए स्टडी आफ सर्टेन कोरिलेप्स आफ सेल्फ कानसेप्ट एमंग स्टूडेनटस ऑफ़ नवोदय विद्यालय , पी . एच . डी . एजूकेशन मैसूर यूनिवर्सिटी।
10. अली जब्बाद , 1996 - स्टडी ऑफ़ सेल्फ कान्सेप्ट वाडी इमेज एडजस्टमेन्ट एण्ड परफार्मेन्स ऑफ़ हाकी प्लेयर्स , पी . एच . डी . फिजीकल एजूकेशन , अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय।
11. उपाध्याय , एस . के . एण्ड विक्रान्त , 2004 - ए स्टडी ऑफ़ इमोशल स्टेबलिटी एण्ड एकेडमिक एचीवमेण्ट ऑफ़ ब्याज एण्ड गल्स एट सैकेण्डरी लेवेल।
12. जेनिफर , एम , 2005, - स्टूडेन्टस सैल्फ कन्सैप्ट रिलेटिड टू एवं एल्टसेटिव हाई स्कूल एक्पीरिएन्स।
13. गुप्ता , एसपी . , 2010 - आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन।